IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 02, 2021

'क्षणदा' में अभिव्यक्त रागात्मकता एवं बौद्धिकता

डॉ.ए.के बिन्दु

एसोसिएट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, महाराजा कॉलेज,एरनाकुलम

पाठकों के हृदय को हिलकोरनेवाली तथा प्रेरणा प्रदायिनी चिंतन शक्ति से संपन्न महादेवी जी का गद्य उनकी वैचारिक विवशता का परिणाम है। अपने पद्य साहित्य में यद्यपि महादेवी जी छायावादी कवित्व, रहस्य दर्शन, और अन्तर्मुखी भावना से प्रभावित रही हैं, फिर भी अपनी निबंध कृतियों के माध्यम से उन्होंने बर्हिमुखी जीवन पर सूक्ष्मतम दृष्टि डाली। उनके शब्दों में "विचार के क्षणों में मुझे गद्य लिखना ही अच्छा लगता है, क्योंकि उसमें अनुभूति ही नहीं, बाह्य परिस्थितियों के विश्लेषण के लिए भी पर्याप्त अवकाश रहता है।" युग के प्रति एक असह्य वेदना, एक व्यापक प्रतिक्रिया और विकल मानसिक अशांति लेकर महादेवी जी गद्य के क्षेत्र में अवतरित होती हैं। उनका गद्य हमारी शिराओं में चेतना भरकर हमें यथार्थ जीवन में झांकने की प्रेरणा प्रदान करता है। उनकी गद्यकला में केवल बौद्धिक विलक्षणता ही नहीं, आत्मा का अंश भी विद्यमान है।

बीज शब्द: महादेवी वर्मा, क्षणदा,रागात्मकता,बौद्धिकता, संवेदनशीलता, संस्कृति,समंजस्य ,सभ्यता, मानवतावाद

मूलआलेख

"हिन्दी के विशाल मन्दिर की वीणापाणी। स्फूर्ति चेतना रचना की प्रतिभा कल्याणी"। महाप्राण निराला का यह कथन एकदम सार्थक है। सचमुच 8महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य के विशाल मन्दिर की सरस्वती हैं। उत्कृष्ट कला का लक्षण है कि उसमें संवेदनशीलता की मात्रा बौद्धिकता से अधिक हों । जब रागात्मक अनुभूतियाँ अपनी सृजनात्मक तीव्रता के साथ कला में व्यक्त हो उठती है, तभी सौंदर्य की सृष्टि होती है। यहाँ महादेवी वर्मा अपनी वास्तविक भाव-संपदा का यथार्थ मूल्यांकन सिद्धांतों के आधार पर करती हैं, जो व्यक्तिगत होकर भी सार्वजनीन है। उन्होंने अक्सर महत्वपूर्ण साहित्यिक समस्याओं, युगीन प्रवृत्तियों और विविध जीवन सिद्धांतों का गहन विवेचन किया है। 'क्षणदा' महादेवी का दूसरा निबन्ध संग्रह है, जिसमें कुल 12 निबन्ध संकलित हैं। प्रत्येक शीर्षक से यह स्पष्ट है कि महादेवी जी किन-किन विषयों पर विचार करना चाहती हैं। 'क्षणदा' के निबंधों में महादेवी के चिंतक का रूप उभरा ही नहीं, गंभीरतापूर्वक स्थापित भी हुआ है। महाकरुणा के अवतार गौतमबुद्ध के बुद्धत्व, भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य, साहित्यकार, संपादक, आधुनिक लेखक, अभिनयकला, राष्ट्र, भाषा, विज्ञान विषयक मीमांसाएँ इन निबन्धों में दर्शित हैं। इन विषयों पर रचे गद्य में महादेवी ने एक ऐतिहासिक एकसूत्रता देने के साथ साहित्य को चिरंतन सत्य के रूप में स्वीकार किया है। 'क्षणदा' के स्फुट विषयों के संदर्भ में महादेवी की रागात्मक प्रतिक्रिया और बौद्धिक विचार व्यक्त हुए हैं। इन सबको एकसूत्रता प्रदान करने वाला तत्व महादेवी की आस्था है।

मनुष्य का जीवन रागात्मक एवं इतिवृत्तात्मक अनुभूतियों का एक भण्डार कहा जा सकता है। मानवीय संबंधों में सामंजस्य लाने के लिए बौद्धिकता के साथ रागात्मक अभिव्यक्ति की भी अपनी भूमिका होती है। 'करुणा का सन्देशवाहक' निबन्ध में महादेवी जी अपने वचनों को तर्क की कसौटी पर कसकर ही स्वीकारनेवाले बुद्ध की बात बताती हैं तो "कसौटी पर' निबन्ध में यों कहा है- "विकास की पहली आवश्यकता है कि हमारे बौद्धिक ऐश्वर्य, हृदय की प्रेरणा और क्रिया में ऐसा सामंजस्यपूर्ण तारतम्य हो, जो

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

हमारे जीवन के राग को विरोधी स्वरों से बेसुरा न कर सके।" महादेवी की राय में एक कलाकार में इस सामंजस्य की प्रवृत्ति अधिक मात्रा में विद्यमान है। कलाकार की दृष्टि में जीवन की कुरूपता तथा सौंदर्य, दुर्बलता तथा शक्ति, पूर्णता और अपूर्णता सबकी सामंजस्यपूर्ण रागात्मक अभिव्यक्ति होती है। लेखिका के अनुसार बाह्य जगत को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। 'प्राकृतिक और मानवीय।' यहाँ पहला दृष्टिकोण वैज्ञानिक तथा दार्शनिक से संबंध रखता है। संसार की सारी सुषमा में व्यर्थता दिखाकर हमारे हृदय में विराग उत्पन्न करना इसका लक्ष्य है तो दूसरा दृष्टिकोण कलाकार से जुड़ा हुआ है। कलाकार विश्व की सभी चेतन-अचेतन वस्तुओं में कल्पना का रंग डालकर पूर्ण और उसके सौंदर्य में सत्य की झांकी दिखाकर हमारे हृदय में आनन्द उत्पन्न कराते हैं। 'साहित्य और साहित्यकार' निबन्ध द्वारा लेखिका यह व्यक्त करती हैं कि साहित्यकार की स्थिति को केवल एक कोण से देखना व्यर्थ है, क्योंकि साहित्य बहुमुखी दायित्व देनेवाला एक रागात्मक कर्म है। महादेवी के विचार में मनुष्य अपनी रागात्मक व्याप्ति के द्वारा ही समष्टि को पहचानता है। इसके लिए बौद्धिक विस्तार की ज़रूरत है। इस व्यप्ति और विस्तार के मूल्यांकन में मानव जाति की प्रगति संभव होगी। उनके अनुसार "नदी जिस प्रकार दोनों तटों को अलग-अलग स्पर्श करके भी अपनी एकता में एक रखती है, उसी प्रकार साहित्य भी जीवन की भिन्न जान पड़ने वाली वृत्तियों को अपने स्पर्श की एकता में एक रखता है।" इससे यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य की व्यक्ति और समष्टिनिष्ठ तथा बुद्धि और भावनिष्ठ अभिव्यक्तियाँ साहित्य की अधिक ऋणी हैं।

आत्मा की मुक्तावस्था से ही सांस्कृतिक इकाई बनती है। यहाँ भेदों और अनेकता से ही मनुष्य अभेदों और एकता की ओर चलता है। इस मुक्तावस्था की सहज अभिव्यक्ति के लिए 'हमारे वैज्ञानिक युग की समस्या' निबन्ध में महादेवी जी यह विचार व्यक्त करती हैं कि बुद्धि से बुद्धि और हृदय से हृदय का तादात्मय अनिवार्य हो जाता है। उनकी दृष्टि में "जिस दिन हमारी बुद्धि में अभेद और हृदय में सामंजस्य होगा, उस दिन हमारी सांस्कृतिक परंपरा को नयी दिशा प्राप्त हो सकेगी।" लेकिन महादेवी वर्मा 'संस्कृति का प्रश्न' निबन्ध द्वारा यह भी जोड़ती हैं कि भारतीय संस्कृति के मूल तत्व समझने के लिए हमें अत्यधिक उदार, निष्पक्ष और व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता रहती है। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति के मेरुदण्ड की खोज भूगर्भ की गहरी गुफाओं, ऊंची शिलाओं और मृत जीवन चिह्नों में न करके भारत के झोंपड़ों में करनी चाहिए। क्योंकि भारतीय संस्कृति प्रत्येक भारतीय के हृदय में स्थापित है। अर्थात् हृदय के राग को यानी अनुभूति को प्रबल बनाकर अत्यंत विवेक के साथ यानी बुद्धि पक्ष को सशक्त करके सामंजस्य स्थापित करना है। इस सामंजस्य में ही भारतीय संस्कृति की नींव पड़ी है। इस सामंजस्य के अभाव के कारण ही आज भेदों और अनेकता की जड़ें जोर पकड़ने लगे हैं।

'हमारा देश और राष्ट्रभाषा' निबन्ध द्वारा अपनी प्रबुद्ध राय वे प्रकट कर रही हैं कि हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ हमारा देश आकार और आत्मा दोनों दृष्टियों से महान एवं सुन्दर है। उसका बाह्य सौंदर्य विविधता की सामंजस्यपूर्ण स्थिति है तो आत्मा का सौंदर्य उस विविधता में छिपी हुई एकता की अनुभूति है। 'कुछ विचार' निबन्ध पर इसका निष्कर्ष निकालते हुए वे यह बताना चाहती हैं कि इस सांस्कृतिक एकता से ही आस्था की किरण फूटती रहती है। मनुष्य की बुद्धि और हृदय का संस्कारक्रम उसके जीवन के समान ही व्यापक और निश्चित है। अतः मानव संस्कृति एक है। 'हमारा देश और राष्ट्रभाषा' निबन्ध में इसका स्पष्टीकरण उन्होंने यों दिया है- "जैसे शरीर एक होने पर भी अंगों का गठन और विकास एक रूप नहीं होता, वैसे ही मानव संस्कृति एक होकर भी अनेक रूपात्मक ही रहेगी। उनकी विविधता का नष्ट होना उसके व्यक्तित्व का पाषाणीकरण है।" इससे यह ध्वनित होता है कि इस रूपात्मक प्रकृति के प्रति

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 02, 2021

हमारी रागात्मक दृष्टि, जीवन के प्रति हमारी आस्था, समाज, देश आदि के विषय में हमारी नैतिक मान्यताएँ एक रही हैं।

मनुष्य के हर कर्म के पीछे विचार, चिंतन, भाव, अनुभूति आदि की एक अटूट परंपरा छिपायी हुई है। इसी परंपरा से हमारा संस्कारक्रम भी अव्यक्त और व्यक्त दोनों सीमाओं को छूकर चलता है। इसके लिए सबसे पहले हमें अपनी परिस्थितियों को अनुकूल बनाकर चलना है। 'कसौटी पर' निबन्ध में यों व्यक्त किया गया है- "राज्यच्युत होने मात्र से ही कोई सम्राट त्यागी साधक नहीं बन जाता।" इससे यह स्पष्ट है कि परिस्थितियों को दोषी ठहरकर जीने से कोई फायदा नहीं, बल्कि उसे अनुकूल बनाकर जीने में ही सफलता है। सच्चाई और मनोयोग के साथ कर्तव्य के पालन करने पर महादेवी वर्मा जोर देती हैं। 'दोष किसका' निबन्ध के माध्यम से वे अपना विचार प्रकट करती हैं "आवश्यकता के अनुसार कोई मनुष्य चाहे मोची का काम करने पर बाध्य हो चाहे न्यायाधीश का, उसे दोष देना अनुचित होगा, परन्तु दोषी वह तब ठहराया जा सकता है, जब न वह मोची का कार्य ठीक-ठीक करने का प्रयास करे न न्यायाधीश का। अर्थात् परिस्थति को दोषी ठहरकर व्यर्थ जीवन बिताने से कोई फायदा नहीं। महादेवी के अनुसार परिस्थितियाँ क्षणजीवी होती हैं, लेकिन उनके संस्कारों से उद्‌भूत जीवन अक्षय ही रहता है। संपर्क, संघर्ष एवं वातावरण से ही मानव का प्रथम परिचय होता है। इसी से अन्तर्जगत एवं मानसिक संस्कार भी प्रभावित होते हैं। याने राग और बुद्धि के संयोग से प्रभावित हम संस्कारयुक्त बन जाते हैं।

महादेवी के विचार में इस रागात्मक एवं बौद्धिकता से युक्त संस्कार में ही कल्याण-अकल्याण की भावना विद्यमान रहती है। इसके लिए चित्त और आचरण की शुद्धता की जरूरत है। 'कसौटी पर' निबन्ध में महादेवी यह बताना चाहती हैं कि इस कल्याण की प्राप्ति के लिए आन्तरिक विकास के साथ ही बाह्य जीवन भी परिष्कृत होना है। लेकिन इस परिष्कृत जीवन के अभाव के कारण हमारी सभ्यता हासोन्मुख अवस्था में है। ऐसी हालत में मनुष्य का बाह्य जीवन उसके आन्तरिक धरातल से बहुत दूर जा पड़ता है। मात्र सिद्धांत शेष रह जाता है। याने विकास के अभाव में बौद्धिकता एवं रागात्मकता में एक प्रकार की शून्यता दिखाई पड़ती है। इस शून्यता के फलस्वरूप बुद्धि एवं हृदय के बीच उचित सामंजस्य नहीं होता है। इस सामंजस्य के अभाव के कारण सिद्धांत और व्यवहार के क्षेत्र में भी भिन्नता पायी जाती है। महादेवी के अनुसार यही भिन्नता नये नये नरकों की सृष्टि करती रहती है। 'कसौटी पर' यह जाहिर है कि "एक ही क्षितिज रेखा पर हमारे आदर्श और स्वप्न किरणों के रंग भरते रहते हैं और हमारा यथार्थ अंधकार के बादल पूंजीभूत करता रहता है।" इससे हमारा आचरण भी पशुता की मूर्ति गढने में लगा रहता है। इस निबन्ध में आचरण की विपरीत स्थिति पर भी महादेवी प्रकाश डालती हैं। उनके ख्याल से ईसा के अनुयायी उनके सिद्धांत की अवहेलना, बुद्ध के उपासक उनके आदर्श के विरुद्ध आचरण कर रहे हैं। इस तथ्य को भी वे जोड़ती हैं कि संसार इस आदर्श को भ्रांति नहीं मानता है। इसका कारण यह होता है कि वह आदर्श बुद्ध के जीवन में स्पन्दित होकर अपने युग की कठिन से कठिन अग्निपरीक्षा पार कर आया है। इसका निष्कर्ष यह होता है कि सत्य, सिद्धांत ये सब उसी अंश तक सारवान है, जिस अंश तक जीवन की कसौटी पर परखा जा चुका है।

महादेवी वर्मा कल्याण के विपरीत तत्व के रूप में दुःख को मानती हैं। धन, काम आदि की तृष्णा मनुष्य को दुःखी बनाती है, साथ ही दूसरों के दुःखों को बढ़ाती है। इस दुख को बुद्ध ने भी पहचान लिया। इस तृष्णा के क्षय से ही कल्याण संभव होगा। इस तृष्णा के कारण मनुष्य में एक दूसरे के प्रति तीव्र क्रोध, प्रतिहिंसा, तीव्र दुर्भावना आदि भाव उत्पन्न होते हैं। चाहे वह माता-पुत्र के बीच में हो, भाई-भाई के बीच में या

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 02, 2021

भाई-बहन के बीच में हो। 'संस्कृति का प्रश्न' निबन्ध में यों कहा गया है कि "मृग को देखकर व्याध में तीव्र क्रोध, तीव्र प्रतिहिंसा, तीव्र दुर्भावना और हिंसा का भाव उत्पन्न होता है। वे एक दूसरे को मृग ही समझने लगेंगे। उनके हाथों में पैने शस्त्र होंगे। वे उन तीक्ष्ण शस्त्रों से एक दूसरे को नष्ट करेंगे।" असलियत से हमें परिचित कराने के साथ ही आशावादी दृष्टिकोण प्रकट करते हुए जाहिर करती हैं कि उन लोगों में से कुछ लोग ऐसे सोचेंगे "न मुझे औरों से काम न औरों का मुझसे काम।" याने परिवर्तन आकर वे एक दूसरे के प्रति शुभकामनाएँ प्रकट करेंगे। लेकिन ऐसे लोग बहुत विरले हैं। यानी अपनी गलतियों को समझकर विवेक के साथ व्यवहार करने वाले बहुत विरले हैं। बुद्धि एवं राग के सामंजस्य से ही यह संभव हो सकता है।

महादेवी के अनुसार महामैत्री और महाकरुणा के अभाव से भी दुःख जन्म लेता है। भावोद्वेग की तीव्रता से अनुभूति संभव होती है। 'स्वर्ग का एक कोना' तथा 'सुई दो रानी, डोरा दो रानी' ये क्षणदा के अन्तर्गत आने वाले दो यात्रा विवरण हैं। इनमें महादेवी की मानवीयता दर्शित है। 'स्वर्ग का एक कोना' में चिरनवीन स्वर्ग सुन्दर शरीर के मर्म में लगे हुए व्रण के समान अपने हृदय में जो नरक पाले हुए हैं, उसका विवरण है। कारखानों में काम करनेवाले बालकों के प्रति महादेवी की आस्था देखी जा सकती है। वे कहती हैं- "शीत ने इन मोम के पुतलों को अंगारों में पाला है और दरिद्रता ने पाषाणों में।" आगे साबित करती है, "छोटी-छोटी बालिकाओं की मन्दस्मित में याचना, प्रौढ़ाओं की फीकी हंसी में विवशता और वृद्धाओं की सरल चितवन में असफल वात्सल्य झांकता रहता था।" यह देखकर महादेवी के विचारों में जो सहानुभूति जाग उठी वह हमारे हृदय को द्रवित करने को सक्षम थी। बौद्धिकता एवं रागात्मकता के समन्वय से उद्‌भूत यह आस्था अतुलनीय है। इसलिए 'हमारे वैज्ञानिक युग की समस्या' निबन्ध में वे स्पष्ट करती हैं कि "भावावेगी मनुष्य दूसरे मनुष्य के निकट पहुँचने के लिए दुर्लघ्य पर्वतों और दुस्तर समुद्रों को पार करने में वर्षों का समय बिताता था। उस युग में भी मानवमात्र की एकता के वे ही वैतालिक रहे हैं।" यह तो स्पष्ट है कि आज स्थिति बदल गयी है। विज्ञान ने वर्षों को घंटों में बदल दिया है। लेकिन मनुष्य-मनुष्य के बीच की दूरी बढ़ गयी। सब एक-दूसरे से अपरिचित बन गये। बुद्धि को बुद्धि के आतंक ने हृदय को हृदय के विरोध में खड़ा क्यों कर दिया है? आज के युग में मनुष्य पास है, परन्तु मनुष्य का शंकाकुल मन पास आनेवालों से दूर होता जा रहा है। स्वस्थ आदान-प्रदान के लिए मन की निकटता आवश्यक है। 'कसौटी पर' निबन्ध में यों कहा है कि "मनुष्य अपने मानसिक ऐश्वर्य को शून्य आकाश में तथा बाह्य जीवन के दारिद्रय को अंधेरे पाताल में बन्दी रखने के लिए बाध्य हो जाता है।" यहाँ साबित होता है कि आज मनुष्य की स्थिति अत्यंत दयनीय है। पहले आत्मविश्वास का संबल होता तो आज उनके कंधों पर असंख्य भूलों का भार है।

आज की भीषणतम स्थिति को महादेवी ने पहचाना। उनके ख्याल से आज जब हम पृथ्वी के एक छोर पर रहकर दूसरे छोर से इस प्रकार बंधे हैं कि एक ओर से उठा स्वर दूसरी ओर का राग भी बन सकता है और चीत्कार भी। उस समय न जीवन का मूल्यांकन सहज और न कसौटी का एक रूप रह गया है। ऐसी दशा में अपनी भूलों को सुधारना आवश्यक है। ऐसा न हो तो जीवन ही संभव न हो सकेगा। 'कसौटी पर' यों कहा गया है- "यदि हम शतुर्मुर्ग के समान मिट्टी में सिर छिपाकर पड़े भी रहें तो उससे इतना ही लाभ हो सकता है कि बाणों के आने की दिशा न जानें, पर उनके स्थायी लक्ष्य बनते रहे।" यहाँ एक बात जाहिर है कि हमारी वर्तमान विकृति में अंधकार जैसी व्यापकता और मृत्यु जैसी एकरसता तो है ही, साथ ही उसकी व्यावहारिक विभिन्नता में अद्‌भुत एकरूपता मिलेगी।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 02, 2021

महादेवी के विचार से मनुष्य का जीवन रागात्मक तथा इतिवृत्तात्मक अनुभूतियों का संघात कहा जा सकता है। इनमें एक तो व्यावहारिक संसार केलिए उपयोगी बनाती है तो दूसरी अलौकिकता की सृष्टि कर कला को जन्म देती है। 'कला और हमारा चित्रमय साहित्य' में लेखिका यों कहती हैं- "मनुष्य में सत्य का ऐसा एक क्रियात्मक और रहस्यमय अंश छिपा हुआ है, जो अपनी अभिव्यक्ति के लिए सुन्दरतम साधन खोजता रहता है और इस सत्य का सौंदर्य में रागात्मक प्रकाशन ही कला के सत्यं शिवं सुन्दरं की परिभाषा हो सकता है।" अर्थात् बौद्धिक एवं रागात्मक सामंजस्य से सत्यं शिवं सुन्दरं की परिकल्पना हो जाती है। लेकिन सत्यं, शिवं, सुन्दरं को विरूप करने वाली अनेक शक्तियाँ हैं। 'हमारा देश और राष्ट्रभाषा' निबन्ध में इसका उल्लेख मिलता है कि "एक सुन्दर स्वप्न अनेक सुन्दर स्वप्नों में समाकर जीवन को विराट सौंदर्य देता है, एक शिव संकल्प अनेक शिव संकल्पों में लीन होकर मनुष्य को विशाल शिवता देता है, एक निष्ठामय कर्म अनेक निष्ठामय कर्मों को मिलाकर विश्व को अक्षय गति देता है। इसके विपरीत एक दुर्भाव अनेक दुर्भावनाओं से मिलकर जीवन को विरूप कर देता है।" अविश्वास, आघात ये सब सत्य एवं सौंदर्य के लिए बाधक तत्व हैं। हृदय और बुद्धि के परिष्कार पर बल देकर महादेवी कहती हैं कि आदिम युग से ही मनुष्य अपने हृदय और बुद्धि का परिष्कार करता आ रहा है। लेकिन इस क्रम के किसी भी बिन्दु पर उसकी मानसिक एवं बौद्धिक वृत्ति का तारतम्य नहीं टूटा। यहाँ लेखिका का विचार है कि मनुष्य के आंसू हंसी के कारण भिन्न हो सकते हैं, लेकिन उनके मूलगत विषाद, आनन्द एक ही है। 'करुणा का संदेशवाहक' निबन्ध के जरिए बौद्धिक होने के साथ-साथ भावुकता से युक्त बुद्ध को हमारे सम्मुख रखकर महादेवी ने अहंग्रस्त बुद्धिजीवी के खोखलेपन को यहाँ दिखाया है। इन पर खिल्ली उड़ाते हुए 'कसौटी पर' निबन्ध में वे लिखती हैं- "दुर्बल भिखारी की उपेक्षा कर चींटियों को चीनी आटे पर पालने वाले तिलकधारी जपी में सहानुभूति का जो अभाव है, वही त्यागी सुधारवादी को दूसरों की भूख पर अपने स्वार्थ का प्रसाद खड़ा करने को दुर्बलता देता रहता है। बुद्ध में जो सहज मानवतावाद विद्यमान था, यह हृदय एवं बुद्धि से मिलकर उन्हें महान बनाता है। लेकिन इसके अभाव के कारण आज संस्कृति एक प्रश्नचिह्न बनकर खड़ी है। सब कहीं शस्त्रों की झंझनाहट में जीवन का संगीत विलीन है। विद्वेष की काली छाया सर्वत्र फैल गयी है। ऐसी स्थिति में हृदय एवं बुद्धि के सम्मिलन से कल्याण संभव होगा। इस यांत्रिक युग में साहित्य को महादेवी मानव संवेदना के ऊपर जाने को प्रेरित करती है। उनकी दृष्टि में प्रादेशिकता, भाषा, धर्म, जाति आदि प्रचारों से पृथक रहकर उसे अभेद कल्याण में प्रवृत्त होना है।

अन्ततोगत्वा महादेवी के रागात्मक उद्वेलन में प्रत्यक्ष आत्मानुभूति है। महादेवी के निबन्धों में उनका जीवन दर्शन पूर्णतया चरितार्थ होता है। इन लेखों में महादेवी की व्यापक तथा गहन अनुभूति, चिंतन-मनन और जीवन-दर्शन का जो पक्ष उभरकर आया है वह अत्यंत सराहनीय एवं महत्वपूर्ण है। महादेवी के प्रतिपाद्य तथ्यों में जहाँ गूढ व्यंग्य और कटु सत्य का समावेश है, वहीं उनकी प्रतिभा अत्यंत रमणीय एवं कुतूहलपूर्ण है। महादेवी के चितन की मौन अनुभूतियाँ इन गद्य कृतियों में मुखर हो गई हैं। वे यहाँ भावुक एवं विचारक के साथ-साथ सुधारक भी हैं। भाव से विचार, हार्दिकता से बौद्धिकता और राग से दर्शन की वृद्धि करती हुई गद्य लेखन में वे अधिकाधिक प्रबल होती रही है।

मनुष्य का विकास समस्याओं का विस्तार है। विज्ञान मनुष्य की भौतिक समस्याओं को हल करने के साथ ही उसकी मानसिक समस्याओं को जटिलतर बनाता चलता है। विज्ञान ने मनुष्य को, हानि पहुँचाने वाली प्रवृत्ति को उसकी शक्ति का मापदंड बनाकर जीवन में एक प्रश्नचिह्न उत्पन्न कर दिया है। ऐसी हालत

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 02, 2021

में महादेवी का निष्कर्ष है कि, "विश्वासी बुद्धि और विवेकी हृदय अपने आपमें सब शंकाओं का समाधान है।"

संदर्भ ग्रंथ

1.क्षणदा-महादेवी वर्मा